बेहतर गुलामी के खिलाफ

डॉ. पी. रवि

यह गुलामी का दौर है, 'बेहतर' गुलामी का। पहले हम गुलाम थे, पर गुलामी का आलिंगन नहीं करते थे। गुलामी के खिलाफ 90 साल लड़ रहे थे। सन् 1947 में राषट्र हुआ लेकिन स्वतंत्र होते ही हम उसे अनदेखा करने लगे। सच्चाई यह है कि हमें स्वातंत्र्य के प्रति सदैव सजग रहना है। हम स्वाधीनता की खुमारी में या स्वार्थ की तंग गलियों में समय गंवाने लगे। प्रौद्योगिकी का विकास, संचार क्रांति आदि मनुष्य को बहुत सारी सुविधायें प्रदान करने लगे। आज मनुष्य को गुमसुम बैठना मात्र है सबकुछ यंत्र करेगा। यहाँ तक कि भोजन करने की तकलीफ तक उसे उठाने की ज़रूरत नहीं, आदेश के अनुसार सबकुछ रसोई में पहूँचेंगे या तो विटमिन टैबलेट निगलकर भी जी सकता है। पैसा कमाना मात्र है बाकी सब हमारे शयनकक्षा में मौजूद होंगे। ऐसे माहौल में मनुष्य इतना सुविधापरस्त हो जाता है कि वह यंत्र (पूंजी का ?) का गुलाम बन गया है। मनुष्य इस बेहतर गुलामी क शीतल छाया में अपने को भूल रहा है। कहीं पर यह गुलामी उदार भी दिखाई देती है तो मनुष्य दीपक की पतंगों की तरह धक्कमधुक्का करता है। वह आगे-पीछे नहीं देखना चाहता है। उसके लिए इतिहास भूलने की चीज़ है। वह वर्तमान में जीता है। उसकी नज़र में बाज़ारी विकास की चकाचौंध है। उसके आगे न वर्तमान क संकट है, न राष्ट्रीयता क सवाल। इस स्थिति की ओर इशारा करते